काव्य का प्रयोजन

प्रयोजनं विना तु मन्दोऽपि न प्रवर्तते ।

आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के छः प्रयोजन हैं- काव्य यश के लिये, धन के लिये, व्यवहार ज्ञान के लिये, अमंगल के नाश के लिये, शीघ्र ही परमानन्द की प्राप्ति के लिये और कान्ता सम्मित उपदेश के लिये होता है, यथा-

"काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥"

इन छः प्रयोजनों पर विचार करते हुये इन्हें तीन वर्गों में बांटा जा सकता है –

कविगत(कवि के लिये)	पाठकगत(पाठक के लिये)	उभयगत(कवि और पाठक दोनों के लिये)
यश, धन	व्यवहार ज्ञान, कान्तासम्मित उपदेश	परमानन्द की प्राप्ति, अमंगल नाश

1. यश- काव्य के निर्माण से कवि को यश की प्राप्ति होती है। **'कालिदासादीनामिव यशः'** । कालिदास, भास, भवभूति, भारवि, माघ आदि को काव्य रचना से अभूतपूर्व यश प्राप्त हुआ । ये महाकवि आज हमारे मध्य विराजमान नहीं है परन्तु आज भी हम उनकी काव्यकला तथा विद्वता की प्रशंसा करते हैं। इन कवियों द्वारा लिखे गये काव्य वर्तमान समय में भी साहित्य और समाज के लिये पथप्रदर्शक हैं।

2. धन- काव्य रचना से कवि को धन की प्राप्ति होती है। **'श्रीहर्षादेर्धावकादीनामिव धनम्'** । प्राचीन काल में राजा तथा समाज के अमीर लोग कवियों को उनकी श्रेष्ठ रचना के लिये सम्मानित तथा पुरस्कृत करते थे । कवियों को राज्याश्रय भी मिलता था । आचार्य मम्मट ने धावक कवि का उदाहरण दिया है। धावक कवि को **'रत्नावली'** नाटिका की रचना के लिये अत्यधिक सम्मान और धन मिला था। धावक कवि ने यह नाटिक राजा हर्ष के नाम से प्रसिद्ध की जिससे कि राजा हर्ष ने प्रसन्न होकर धावक कवि को बहुत धन दिया । काव्य रचना से धन प्राप्ति कई रूपों में होती है- पुरस्कार के माध्यम से(नोबल पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार)। काव्य के विक्रय से(काव्य के खरीदे जाने पर धन)।

3. व्यवहार ज्ञान- महान् व्यक्ति भी सम्यक् व्यवहार के अभाव में निन्दित होता है तथा अच्छे आचरण और व्यवहार में कुशल कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी सम्मान पाता है । काव्य व्यवहार सिखने का एक अच्छा स्रोत है। काव्य पढकर तथा नाटक देखकर गुरु, राजा, मंत्री, मुनि आदि के साथ सम्यक् आचरण की शिक्षा मिलती है। **'राजादिगतोचिताचारपरिज्ञानम्'** ।

4. अमंगल का नाश- 'आदित्यादेर्मयूरादीनामिवानर्थ निवारणम्' । आचार्य मम्मट के लक्षण में यह **'शिवेतरक्षतये'** से वर्णित है। मयूर कवि ने सूर्यशतक नाम के काव्य की रचना कर अपने अमंगल को दूर किया था। एक प्राचीन कथा के अनुसार मयूर के अनुचित व्यवहार से क्रुद्ध होकर बाणभट्ट की पत्नी ने उनको शाप दे दिया। उस शाप के प्रभाव से मयूर को कुष्ठ

रोग हो गया। बाणभट्ट की सलाह पर मयूर ने सूर्य की उपासना की तथा सूर्य शतक नाम से सूर्यस्तोत्र की रचना की। विशेषकर स्तोत्रकाव्य की रचना तथा पाठ से अशिव के निवारण की बात कही जाती है।

5. परमानन्द- 'सकलप्रयोजनमौलिभूतं समनन्तरमेव रसास्वादनसमुदभूतं विगलितवेद्यान्तरमानन्दम्'। काव्य का मूल उद्देश्य रसास्वादन है। रसास्वादन में परमानन्द की अनुभूति होती है। इस परमानन्द की अनुभूति में व्यक्ति समस्त दुःख परेशानियों को भूल जाता है तथा एकमात्र रसानन्द की अनुभूति में तल्लीन रहता है। रसानन्द प्राप्ति का एकमात्र स्रोत काव्य है।

6. कान्ता सम्मित उपदेश- काव्य कान्ता के समान उपदेश देता है। शास्त्र में तीन प्रकार की उपदेश शैली प्रसिद्ध है- प्रभुसम्मित, सुहृतसम्मित तथा कान्तासम्मित। प्रभुसम्मित उपदेश शब्दप्रधान होता है। यह वस्तुतः उपदेश न होकर आदेश वाक्य होता है। वेदादिशास्त्रों के वचन ऐसे ही उपदेश हैं- **'प्रभुसम्मित शब्दप्रधानवेदादिशास्त्रेभ्यः'।**

सुहृतसम्मित से तात्पर्य है पुराणादि की शैली। यहां शब्द के स्थान पर अर्थ की प्रधानता होती है। इसमें तात्पर्य पर अधिक बल दिया जाता है- **'सुहृत्सम्मितार्थतात्पर्यवत्पुराणादीतिहासेभ्यश्च'**। सुहृत से तात्पर्य मित्र होता है। जिस प्रकार मित्र उचित और अनुचित का उपदेश देता है उसी प्रकार पुरा इतिहासादि कर्तव्याकर्तव्य की शिक्षा देते हैं।

कान्तासम्मित उपदेश में न शब्द की प्रधानता होती है और न ही अर्थ की प्रधानता होती है। इन दोनों से भिन्न रस के अंगभूत व्यञ्जना की प्रधानता होती है। कान्ता प्रियतमा को कहते हैं। प्रियतमा जब किसी कार्य में अपने प्रियतम को प्रवृत्त करना चाहती है तब वह उस कार्य को सरस बनाकर प्रस्तुत करती है। कान्ता के व्यवहार्थ में सरसता होती है, जिससे प्रियतम सहज ही वाञ्छित कार्य में प्रवृत्त हो जाता है। काव्य की शैली भी ऐसी ही होती है।

इसमें रस की प्रधानता होती है। इस उपदेश मे रसास्वादन के साथ कर्तव्याकर्तव्य की शिक्षा सहज ही मिल जाती है- **'रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्'**।